

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, क्राइस्टोलॉजी, सत्र 9, सिस्टमैटिक्स, पूर्वअस्तित्व

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा क्राइस्टोलॉजी पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 9 है, सिस्टमैटिक्स, प्रीएक्सिस्टेंस।

आइए हम प्रार्थना करें, प्रभु का आशीर्वाद मांगें।

दयालु पिता, हम आपके वचन और उसकी शिक्षाओं के लिए आपका धन्यवाद करते हैं। हमें प्रकाशित करें ताकि हम आपके पुत्र, हमारे उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह के बारे में आपके संदेश को समझ सकें, और हम उनके पवित्र नाम में प्रार्थना करते हैं। आमीन।

हमने, व्यापक रूप से नहीं, लेकिन उम्मीद है कि पर्याप्त रूप से, वास्तविक व्यवस्थित विज्ञान, पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी और फिर आधुनिक क्राइस्टोलॉजी की ओर बढ़ते हुए खोज की है। हम वास्तव में व्याख्या, या कम से कम व्याख्या, जो बाइबिल के पाठ की व्याख्या पर आधारित है, के आधार पर एक व्यवस्थित सारांश शुरू करने के लिए तैयार हैं। हम जिन श्रेणियों का उपयोग करेंगे, उनका एक बार फिर सारांश देते हुए, पूर्व-अस्तित्व, यीशु की मानवता का अस्तित्व बेथलेहम में शुरू हुआ, लेकिन शाश्वत पुत्र का जीवन बेथलेहम में शुरू नहीं हुआ।

वास्तव में, इसकी कभी कोई शुरुआत नहीं हुई। अवतार शाश्वत पुत्र का चमत्कार है जो खुद को एक इंसान नहीं बल्कि एक सच्चा मानव शरीर और आत्मा के रूप में लेता है ताकि अब से, हमेशा के लिए, आगे बढ़ते हुए; वह ईश्वर-मनुष्य है। कुंवारी जन्म को और अधिक सटीक रूप से हमारे प्रभु के कुंवारी गर्भाधान कहा जाता है, जिसका अर्थ है कि उनका गर्भाधान कुंवारी मरियम के गर्भ में पवित्र आत्मा द्वारा अलौकिक था, जो वास्तव में उनकी माँ थी, लेकिन यीशु का कोई मानवीय पिता नहीं था।

मसीह के ईश्वरत्व का अर्थ है कि वह वास्तव में ईश्वर है, जैसा कि चाल्सेडोनियन परिभाषा में कहा गया है। उसकी मानवता का अर्थ है कि वह वास्तव में मनुष्य था, अपनी मानवता के संबंध में हमारे साथ एकरूप था। वह वास्तव में ईश्वर है, अपने ईश्वरत्व के संबंध में पिता के साथ एकरूप है।

वह वास्तव में एक इंसान बन गया, जो अपनी मानवता के संबंध में हमारे साथ एकरूप था। वह एक व्यक्ति है, दो नहीं, जैसा कि नेस्टोरियनवाद ने सिखाया, और न ही दोनों का मिश्रण, एक ऐसा संयोजन जो न तो ईश्वर है और न ही मनुष्य, जैसा कि मोनोफ़िज़िटिज़्म या यूटीचियनवाद ने सिखाया। दो राज्यों का सिद्धांत भी प्रभु की इच्छा से पहुँचेगा, और यही तरीका है जिससे पहली सदी में धरती पर यीशु और अब स्वर्ग में यीशु के बीच अंतर किया जा सकता है।

यह वही ईश्वर-मनुष्य है, लेकिन वह दो कालानुक्रमिक चरणों या अवस्थाओं या स्थितियों से गुज़रा, दो कालानुक्रमिक चरण और संगत स्थितियाँ, अपमान की स्थिति जो उसकी मृत्यु और दफ़न में समाप्त होती है, उसकी उत्कर्ष की स्थिति जो उसके पुनरुत्थान से शुरू होती है और उसके दूसरे आगमन में समाप्त होती है, जिस समय वह सभी चीज़ों को अपने अधीन कर लेगा। हम मसीह के पूर्व-अस्तित्व से शुरू करते हैं। पूर्व-अस्तित्व क्या है? इसका अर्थ है नासरत का यीशु।

यह ठीक से नहीं कहा गया क्योंकि यीशु नाम उनकी मानवता से संबंधित है। एक अर्थ में, अगर हम यीशु की अनंतता के बारे में बात करते हैं, तो यह गलत नहीं है; यह उपयोग करने के लिए सबसे अच्छा नामकरण नहीं है। यूसुफ और मरियम दोनों को उसका नाम यीशु रखने के लिए कहा गया था, इसलिए शाश्वत के बारे में बात करना वास्तव में सही नहीं है, त्रिदेव के दूसरे व्यक्ति यीशु के बारे में बात करना वास्तव में सटीक नहीं है।

वह पुत्र है, वचन है, प्रकाश है, लेकिन वह मनुष्य बनने से पहले से ही अस्तित्व में था। यह उसका पूर्व-अस्तित्व है। मैं पुत्र के पूर्व-अस्तित्व के बाइबिल प्रमाणों पर पहुँचने से पहले एक प्रश्न का उत्तर देना चाहता हूँ।

क्या पिता और या पवित्र आत्मा के पूर्व-अस्तित्व के बारे में बात करना सही है? जब मैंने कक्षा में यह प्रश्न पूछा, तो कई बार छात्रों ने हाँ कहा, और उनका मतलब था कि पिता और आत्मा भी पुत्र के साथ शाश्वत हैं; वे सह-शाश्वत हैं, और यह सच है। ईश्वरत्व के सभी तीन व्यक्ति शाश्वत हैं, लेकिन तीनों नहीं बल्कि तीनों व्यक्तियों का कोई पूर्व-अस्तित्व नहीं है। पूर्व-अस्तित्व का अर्थ है बाद का अस्तित्व, और केवल पुत्र ही देहधारी हुआ।

आप कह सकते हैं कि पिता और आत्मा का अस्तित्व हमेशा एक जैसा ही रहता है, और पुत्र ने अपने अस्तित्व के तरीके में बदलाव का अनुभव किया, जो कि पूर्व-अवतार पुत्र होने से था, वह अवतार में और हमेशा के लिए देहधारी पुत्र बन गया। इसलिए, पूर्व-अस्तित्व केवल एक क्राइस्टोलॉजिकल श्रेणी है। यह पिता या पुत्र से संबंधित नहीं है, और फिर भी, मैं बहुत स्पष्ट होना चाहता हूँ: त्रिदेवों का सिद्धांत कहता है कि एक ईश्वर है, और एक ईश्वर में तीन शाश्वत व्यक्ति शामिल हैं, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, और ये तीनों कभी अलग नहीं होते, बल्कि वे अलग-अलग होते हैं।

हम व्यक्तियों में अंतर करते हैं, और हम उन्हें भ्रमित नहीं करते। इसके अलावा, वे परस्पर एक दूसरे में रहते हैं, और मैं वास्तव में अभी त्रिएकत्व के सिद्धांत की शिक्षा नहीं दे रहा हूँ, इसलिए वापस उस विषय पर आते हैं। हम पुत्र के पूर्व-अस्तित्व को कैसे साबित कर सकते हैं? क्या बाइबल पुत्र के पूर्व-अस्तित्व की शिक्षा देती है? इसका उत्तर हाँ है - इसे दिखाने के दो तरीके हैं।

दूसरा तरीका यह है कि नया नियम सीधे तौर पर उसके पूर्व-अस्तित्व के बारे में बताता है, जिसमें उसे सृष्टि जैसी चीज़ों का वर्णन किया गया है। चूँकि पुत्र सृष्टि में पिता का प्रतिनिधि है, इसलिए जाहिर है कि वह मनुष्य बनने से पहले अस्तित्व में था, लेकिन पहला प्रमाण पुराने नियम में पूर्व-अवतार पुत्र का प्रकट होना है। कई बार, परमेश्वर पुराने नियम में प्रकट होता है।

वह खुद को मानवीय इंद्रियों, खास तौर पर दृष्टि के सामने प्रकट करता है। इन्हें थियोफनी कहा जाता है, खास तौर पर दृश्यमान, कभी-कभी अन्य इंद्रियों के लिए भी, लेकिन विशेष रूप से अदृश्य ईश्वर के दृश्यमान प्रकटन। कुछ थियोफनी क्रिस्टोफनी हैं।

यह कैसे काम करता है, इस बारे में एक व्याख्यात्मक समस्या है, और मैंने इस समस्या को हल नहीं किया है। मुझे यकीन नहीं है, जैसा कि कुछ लोग हैं कि हर थियोफनी एक क्रिस्टोफनी है। मुझे यकीन नहीं है, लेकिन मुझे यकीन है कि जहां नया नियम पुराने नियम के थियोफनी को क्रिस्टोफनी, एक उपस्थिति, पुत्र की पूर्व-अवतार उपस्थिति कहता है, वह एक क्रिस्टोफनी है।

इसलिए, यदि मैं पुराने नियम में पूर्व-अवतार पुत्र के प्रकटन को दिखाता हूँ, तो वे मसीह के पूर्व-अस्तित्व को सिद्ध करते हैं। आइए यूहन्ना 12 और पद 40 से शुरू करें। मैं यूहन्ना के सुसमाचार की प्रस्तावना, यूहन्ना 1, 1 से 18, की विस्तृत व्याख्या करने जा रहा हूँ, यदि प्रभु चाहें, तो आज बाद में जब हम इस व्याख्यान श्रृंखला में बाद में अवतार के साथ काम करेंगे।

जॉन एक अद्भुत पुस्तक है। यह एक साहित्यिक और धार्मिक उत्कृष्ट कृति है, जो सिनॉप्टिक्स से अलग है, उनके पूरक है, और शायद हम सिनॉप्टिक्स की तुलना में अधिक गहरे और अधिक धार्मिक शब्दों का उपयोग कर सकते हैं, जो समान रूप से ईश्वर के शब्द हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। जॉन 12 में, यीशु के सांसारिक मंत्रालय में बहुमत की प्रतिक्रिया का सारांश देने के बाद, एक जर्मन विद्वान ने सुसमाचारों को उनकी प्रस्तुति कहा जो लंबी प्रस्तावनाओं के साथ यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में है।

इसमें कुछ सच्चाई है, और जॉन में दूसरों से ज़्यादा, क्योंकि अध्याय 13 से शुरू होकर, यीशु दुनिया के लिए दरवाज़ा बंद कर देता है, और 13 से 21 तक, यह सिर्फ यीशु और उसके शिष्य हैं, और आप कह सकते हैं कि यह उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में तैयारी और शिक्षा है। वे, यहाँ हम जाते हैं, लंबी प्रस्तावनाओं के साथ मृत्यु और पुनरुत्थान की कहानियाँ हैं। जॉन बीच में विभाजित करता है, उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान से पहले 12 अध्याय, और फिर 13 से 21 तक, उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में तैयारी और शिक्षा, खुद के कर्म, और इसी तरह।

यूहन्ना हमें अध्याय 20:30 और 31 में अपने सुसमाचार का उद्देश्य बताता है। यीशु ने अपने शिष्यों की उपस्थिति में कई अन्य चमत्कार किए, और कई अन्य संकेत उन चमत्कारों के लिए यूहन्ना के पसंदीदा शब्दों में से एक हैं जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं। ये संकेत यूहन्ना 20:30 और 31 में लिखे गए हैं, ताकि तुम विश्वास कर सको कि यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र है, और उसके नाम से जीवन पाओ।

यूहन्ना ने जानबूझकर यूहन्ना 12:37 को 20:30 और 31 के साथ समान्तर किया है। यूहन्ना 12:37, मैंने वास्तव में, इसे उल्टा कर दिया है, बेशक। वह यूहन्ना 20:30 और 31, उद्देश्य कथन को, यूहन्ना के सुसमाचार के पहले 12 अध्यायों में यीशु के संकेतों और कथनों के इस सारांश प्रतिक्रिया के साथ समान्तर करता है, जो अध्याय 12 में श्लोक 37 में दिया गया है।

हालाँकि उसने उनके सामने बहुत सारे चिन्ह दिखाए थे, फिर भी दुनिया, खास तौर पर यहूदी, यहूदी लोग, उस पर विश्वास नहीं करते थे। 20:30, और 31 चिन्हों के उल्लेख और विश्वास के उल्लेख के साथ इसे दोहराते हैं, और फिर भी वे बहुत अलग हैं। हालाँकि इसका उद्देश्य पुत्र की महिमा करना है, उसके चिन्हों और उपदेशों के बारे में बात करना ताकि लोग उस पर मसीह, परमेश्वर के पुत्र के रूप में विश्वास कर सकें, और अनन्त जीवन पा सकें, दुख की बात है कि पहले 12 अध्यायों में अधिकांश प्रतिक्रियाओं को इस तरह से संक्षेपित किया गया है।

हालाँकि उसने उनके सामने बहुत सारे संकेत किए थे, फिर भी सबूत अपर्याप्त नहीं थे। सकारात्मक रूप से कहें तो, देहधारी पुत्र की पहचान के लिए पर्याप्त सबूत थे। फिर भी, उन्होंने अभी भी उस पर विश्वास नहीं किया।

ताकि भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा कही गई बात पूरी हो सके, और वह यशायाह 53 को उद्धृत करता है, प्रभु जिसने हमारी सुनी हुई बातों पर विश्वास किया है, जो उसने हमसे सुनी है, और जिसके लिए प्रभु का भुजबल प्रकट हुआ है। इसलिए, वे इस पर विश्वास नहीं कर सके। फिर से, यशायाह ने कहा, उसने उनकी आँखें अंधी कर दी हैं और उनके दिलों को कठोर कर दिया है, ताकि वे अपनी आँखों से न देखें और अपने दिल से न समझें और फिरें, और मैं उन्हें चंगा कर दूँ। जिस श्लोक में हम बहुत रुचि रखते हैं वह 41 है।

यशायाह ने ये बातें इसलिए कहीं क्योंकि उसने उसकी महिमा देखी और उसके बारे में बोला। इस पर मेरा अपना विचार यह है कि यूहन्ना हमें एक चियास्म देता है। नियमित समानांतरता A, B, A, B, या A, B, C, A, B, C के पैटर्न का अनुसरण करती है। आप जितने चाहें उतने सदस्य रख सकते हैं, लेकिन यह व्यवस्थित है।

पैटर्न दोहराता है: ए, बी, सी, डी, ए, बी, सी, डी। उलटा समानांतरवाद या चियास्म दूसरे सदस्य को उलट देता है, इसलिए ए, बी, सी, सी, बी, ए, या इस मामले में, ए, बी, बी, ए। ए, पद ३८ में यशायाह ५३ का उद्धरण है। बी, पद ४० में यशायाह ६ का उद्धरण है। बी अभाज्य ४१ ए है।

यशायाह ने ये बातें इसलिए कहीं क्योंकि उसने उसकी महिमा देखी। वह हमें बता रहा है कि यशायाह ने परमेश्वर की महिमा कहाँ देखी, और यह वही जगह है जहाँ उसने यशायाह 6 को उद्धृत किया। तो, यशायाह 53 से एक उद्धरण, यशायाह 6 से एक उद्धरण, जहाँ वह कहता है, यशायाह ने ये बातें इसलिए कहीं क्योंकि उसने उसकी महिमा देखी, यशायाह 6, और उसके बारे में बोला, यह भी यशायाह 6 से संबंधित है, लेकिन यशायाह 53 से भी संबंधित है। तो, ए, यशायाह 53, बी, यशायाह 6, बी प्राइम, यशायाह 6, ए प्राइम, यशायाह 53।

यह सब कहने का मतलब यह है कि यहाँ के संदर्भ में, यशायाह ने ये बातें इसलिए कहीं क्योंकि उसने उसकी महिमा देखी और उसके बारे में बात की, आयत 42। फिर भी, कई अधिकारियों ने उस पर विश्वास किया। माफ़ करें।

यूहन्ना 12. मेरा मानना है कि ईएसवी ने बिल्कुल सही कहा है। यशायाह ने ये बातें इसलिए कहीं क्योंकि उसने उसकी महिमा देखी और उसके विषय में बोला।

फिर भी, बहुत से शासकों ने उस पर विश्वास किया, निश्चित रूप से उस समय यीशु के बारे में बात कर रहे थे, लेकिन फरीसियों के कारण, वे उसे स्वीकार नहीं कर रहे थे ताकि उन्हें वास्तव में आराधनालय से बाहर न निकाला जाए, जो बहिष्कार का एक प्रारंभिक रूप था। यूहन्ना उस व्यक्ति की पहचान करता है जिसकी महिमा यशायाह ने यशायाह 6 में यीशु के साथ देखी थी, जिस पर कुछ शासकों ने विश्वास किया था। हम यशायाह 6 की ओर मुड़ते हैं। यदि आप भ्रमित हो रहे हैं, तो हम पुराने नियम में उसके प्रकटन को दिखाकर देहधारी पुत्र के पूर्व-अस्तित्व को प्रदर्शित कर रहे हैं।

यशायाह 6, जिस वर्ष राजा उज्जियाह की मृत्यु हुई, मैंने प्रभु को एक ऊंचे सिंहासन पर बैठे देखा, और उसके वस्त्र की पूछ मंदिर को भर रही थी। उसके ऊपर सेराफिम खड़े थे। प्रत्येक के छह पंख थे।

दो से उसने अपना मुंह ढांप लिया, दो से उसने अपने पांव ढांप लिए, और दो से वह उड़ गया। और एक ने दूसरे को पुकारकर कहा, पवित्र, पवित्र, पवित्र सेनाओं का यहोवा है। यह यहोवा सेनाओं का यहोवा है।

सारी पृथ्वी उसकी महिमा से भरी हुई है। और पुकारनेवाले के शब्द से डेवढ़ी की नींव हिल गई, और भवन धुँएँ से भर गया। और मैंने कहा, हाय मुझ पर, क्योंकि मैं नाश हुआ; क्योंकि मैं अशुद्ध होठों वाला मनुष्य हूँ, और मैं अशुद्ध होठों वाले लोगों के बीच में रहता हूँ, क्योंकि मैंने राजा को, अर्थात् सेनाओं के यहोवा को, अर्थात् सेनाओं के यहोवा को अपनी आँखों से देखा है।

जिस महिमा के बारे में साराफिम ने गाया वह यहोवा की महिमा है। और यूहन्ना कहता है कि यहोवा, इस संदर्भ में, पूर्व-अवतार पुत्र है। यूहन्ना हमें बताएगा कि हमें उसे पूर्व-अवतार शब्द, प्रकाश, पुत्र कहना चाहिए।

ईसाई धर्मशास्त्र उन्हें त्रिदेवों का दूसरा व्यक्ति कहता है। यानी हमारे प्रभु की मानवता पहली सदी में बेथलेहम में कुंवारी के गर्भ में शुरू हुई। यह पहले अस्तित्व में नहीं थी।

कुछ लोगों के विपरीत, मुझे लगता है कि मसीह की पूर्व-अस्तित्व वाली मानवता, अच्छे लोगों के लिए भी, अजीब विचार है। नहीं, नहीं, नहीं। लेकिन अवतार का व्यक्ति कोई मनुष्य नहीं है।

व्यक्ति पुत्र है। व्यक्तित्व की निरंतरता यीशु की मानवता द्वारा प्रदान नहीं की जाती है। व्यक्तित्व की निरंतरता वास्तव में पुत्र की पहचान द्वारा प्रदान की जाती है।

वह पूर्व-अवतार पुत्र था, जो स्वर्ग में अनंत काल तक पिता और पवित्र आत्मा के साथ सह-समान और सह-शाश्वत था, और पूर्व-अवतार पुत्र देहधारी पुत्र बन गया। वह वही व्यक्ति है। वह किसी व्यक्ति को अपने पास नहीं ले जाता, और परमेश्वर आकर किसी व्यक्ति को शक्तिशाली या अद्वितीय रूप से नहीं भरता।

पुत्र अपने आप में एक मानवीय स्वभाव ग्रहण करता है, जो मानव प्राणियों का निर्माण करता है, अर्थात् एक मानव शरीर और एक मानव आत्मा। वह ऐसा अलौकिक रूप से करता है जैसे वह

गर्भ में होता है; उसकी मानवता गर्भ में होती है, क्षमा करें, मरियम के गर्भ में, जिसमें मानवता कभी भी उसके गर्भ में उसकी दिव्य प्रकृति के साथ एकता के बिना अस्तित्व में नहीं रहती है। व्यक्तित्व, पुत्र, पूर्व-अवतार, अवतार।

पुत्र के अवतार से पहले के प्रकटनों से हमें पता चलता है कि वह पहले से ही अस्तित्व में था। वह दिव्य मानव बनने से पहले एक दिव्य प्राणी था। वह हमारे और हमारे उद्धार के लिए ईश्वर-मनुष्य बनने से पहले ईश्वर था, जैसा कि धर्मग्रंथ कहते हैं।

एक और उदाहरण। यूहन्ना 8 में, यह मत्ती 23 के समान है, जहाँ यीशु यहूदी नेताओं को फटकारते हैं। वह उन पर इतना कठोर क्यों है? वह उन्हें आशीर्वाद क्यों देता है? क्योंकि वह उनकी परवाह करता है।

अगर आप चाहें तो वह विवाद धर्मशास्त्र में संलग्न है। वह उनके पंख खड़काता है। वह उनका सामना करता है।

ओह, ऐसा नहीं था। उसके लिए यह आसान तरीका नहीं था। आसान तरीका तो यही होता कि वह योजना के साथ चलता, उनकी योजना के साथ, उनके पंख न उखाड़ता। क्या तुम मजाक कर रहे हो? वह उन्हें अलग-थलग कर देता है।

वह उन्हें भड़काता है। वह शनिवार को जानबूझकर चंगा करके और उनके पाखंड को उजागर करके उनका ध्यान आकर्षित करता है। वह उनके द्वारा परमेश्वर के वचन में कुछ जोड़ने और परमेश्वर के वचन की अवज्ञा करने को बर्दाश्त नहीं कर सकता, खास तौर पर हृदय में।

तो, इस सबका नतीजा क्या है? मैं हमेशा प्रेरितों के काम 6:7 से चकित होता हूँ। यह यूहन्ना 8 पर जाने से पहले एक संक्षिप्त विवरण है, जहाँ वह अब्राहम के पुत्रों को शाब्दिक रूप से, शारीरिक रूप से दोषी ठहराता है और उन्हें शैतान के पुत्र कहता है। यूहन्ना 6:7, और परमेश्वर का वचन बढ़ता रहा, और यरूशलेम में शिष्यों की संख्या बहुत बढ़ गई, और बहुत से याजक विश्वास के आज्ञाकारी बन गए।

लेवियों, उन्हीं यहूदी नेताओं का उन्होंने बार-बार विरोध किया, जिन्होंने अंततः उन्हें मारने की साजिश रची। उनका विवादास्पद धर्मशास्त्र, उनकी व्याख्या, उनके पाखंडों का पर्दाफाश, उनके द्वारा कानून की गलतफहमियों को चुनौती देना, और उन्हें मसीहा के रूप में मानने से इनकार करने के लिए उनकी निंदा करना। परमेश्वर ने उनमें से कई लोगों को बचाने के लिए अच्छे प्रभाव का इस्तेमाल किया।

यह देखना एक अद्भुत बात है। जॉन 8, वह धमाकेदार तरीके से बोल रहा है। ओह, मेरा शब्द, यह इतना शक्तिशाली है कि व्याख्याकार उनमें से कुछ को संभाल नहीं सकते।

अध्याय 2 से ही शुरू करते हुए, लगभग 100 बार, पाठ्य भिन्नता के आधार पर, 99 या 100 बार जॉन ने विश्वास शब्द का उल्लेख किया है। उनमें से कुछ बार, वह आंशिक, झूठे या अपर्याप्त

विश्वास का सिद्धांत सिखाता है। मैं अपर्याप्त कहना पसंद करता हूँ क्योंकि यह अन्य अपर्याप्तताओं को समाहित करता है।

और यहाँ, अध्याय 8 की आयत 30 में, जब वह ये बातें कह रहा था, तो बहुतों ने उस पर विश्वास किया। अब, झूठे विश्वास के बारे में यूहन्ना के झूठे सिद्धांत को समझने का तरीका शब्दावली से नहीं है। यह बिल्कुल वही शब्द हैं जिनका उपयोग वह विश्वास के बारे में बात करने के लिए करता है।

मसीह को स्वीकार करना, मसीह में विश्वास करना, आमतौर पर वह इसे इस तरह से कहता है, इस तरह की बातें। यह संदर्भ है। और अगर उसके पास केवल श्लोक 30 होता, तो मैं कहता कि इसका मतलब सच्चा विश्वास है, है न? लेकिन 31 को देखें।

इसलिए, यीशु ने उन यहूदियों से कहा जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, मुझे नहीं पता, मेरे लिए सामान्य व्याख्याशास्त्र कहता है कि आप 30 के बाद 31 का प्रयोग करते हैं, और ऐसा लगता है कि वह उन लोगों के बारे में बात कर रहा है, है न? ऐसा लगता है। यदि आप मेरे वचन में बने रहते हैं, तो आप वास्तव में मेरे शिष्य हैं; आप सत्य को जानते हैं, और सत्य आपको स्वतंत्र करेगा। उन्होंने कहा, वाह, वाह, वाह, रुको, समय समाप्त।

आज़ाद? हम अब्राहम की संतान हैं और कभी किसी के गुलाम नहीं रहे। आप कैसे कह रहे हैं कि हम आज़ाद हो जाएँगे? क्या वे रोमनों को भूल रहे हैं? मुझे वह हिस्सा समझ में नहीं आया। लेकिन मुझे लगता है कि वे आध्यात्मिक रूप से बात कर रहे हैं।

इसे संदेह का लाभ दिया गया है। ओह, मेरे शब्द, यीशु ने उन्हें बस इसे करने दिया। और इस पूरे मार्ग की व्याख्या करना मेरा उद्देश्य नहीं है, लेकिन यदि आप वास्तव में अब्राहम के बच्चे थे, जैसा कि आप श्लोक 39 में दावा करते हैं, तो आप वही करेंगे जो वह करता है, जो उसने किया।

इसके बजाय, तुम झूठे और हत्यारे हो। वह बिजली के सॉकेट में उनकी उंगली डालना जारी रखता है। वह ऐसा क्यों कर रहा है? उन्हें जगाने के लिए, उन्हें बनाने के लिए, उन्हें यह बताने के लिए कि वह कौन है और उसके चमत्कार और उसके संदेश क्या हैं ताकि वे बच सकें।

वे जैसे हैं वैसे अच्छे नहीं हैं। इसलिए, वे झूठे कैसे हैं? क्योंकि वे उसे अस्वीकार करते हैं, जो परमेश्वर की ओर से सत्य लाता है। वे हत्यारे कैसे हैं? क्योंकि वे अपने दिलों में उससे नफरत करते हैं, और वह यह जानता है।

अंततः, उनके क्रूस पर चढ़ने से नफ़रत ही निकलेगी। तुम्हारे पिता अब्राहम नहीं हैं। तुम शैतान के बेटे हो।

वाह! श्लोक 44 और उसके बाद। लेकिन क्योंकि मैं तुम्हें सच बताता हूँ, श्लोक 45, तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते।

वे झूठ के प्रति इतने प्रतिबद्ध हैं कि वे सत्य को स्वीकार नहीं कर सकते। आप में से कौन मुझे पाप का दोषी ठहराता है? मैं सुझाव दूंगा कि हममें से कोई भी अपने दुश्मनों से ऐसा न कहे। क्योंकि, बेशक, जो लोग हमें अच्छी तरह जानते हैं वे हमें पाप का दोषी ठहरा सकते हैं, लेकिन यीशु नहीं।

मैं तुमसे सच कहता हूँ, तुम मेरी बात पर विश्वास क्यों नहीं करते? जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर की बातें सुनता है। तुम इसलिए नहीं सुनते कि तुम परमेश्वर के नहीं हो।

वे बहुत क्रोधित हो जाते हैं। वे उसे सामरी और दुष्टात्मा से ग्रस्त आदमी कहते हैं। और वह आगे बढ़ जाता है।

उनका दावा है कि जो व्यक्ति उन पर विश्वास करता है वह हमेशा के लिए जीवित रहेगा, जिसे वे गलत समझते हैं। गलतफहमियाँ यूहन्ना के सुसमाचार का एक बड़ा हिस्सा हैं। अगर वह दिखाता है कि पाप का उसका मुख्य सिद्धांत अविश्वास है, और इसका एक हिस्सा गलतफहमी है।

पिता मेरी महिमा करते हैं। तुम मेरा अपमान करते हो। मैं पिता का आदर करता हूँ।

श्लोक 56. आपके पिता अब्राहम ने स्वीकार किया है कि वे अब्राहम के वंश से हैं। इस अर्थ में, वे उसके वंशज हैं।

वे उसके बेटे हैं, है न? लेकिन वे आध्यात्मिक रूप से उसके बेटे नहीं हैं। वे अपने पिता शैतान के बेटे हैं, जिसके कामों की वे नकल करते हैं। तुम्हारे पिता अब्राहम को खुशी हुई कि वह मेरा दिन देखेगा।

उसने यह देखा और खुश हुआ। यहूदी बस भड़क गए। आप अभी 50 साल के भी नहीं हुए हैं और आपने अब्राहम को देख लिया है।

यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, अब्राहम के होने से पहले मैं हूँ।” इसलिए उन्होंने उसे मारने के लिए पत्थर उठाए।

लेकिन यीशु ने खुद को मारा और मंदिर से बाहर चला गया। आधे समय तक, वह खुद को छिपाता है, अपनी मानवीय जिम्मेदारी दिखाता है। बाकी आधे समय, वह पिता की वसीयत में मुसीबत के बीच में चला जाता है, और यह कहता है कि किसी ने उस पर हाथ नहीं डाला क्योंकि उसका समय अभी तक नहीं आया था।

दोनों सत्य हैं। डी.ए. कार्सन की अद्भुत पुस्तक, *दिव्य संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी, बाइबिल परिप्रेक्ष्य और तनाव*। कार्सन इसका शीर्षक जॉन के सुसमाचार में दिव्य संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी रखना चाहते थे।

प्रकाशकों को पता था कि अगर वे उस पूर्वसर्ग वाक्यांश को शामिल नहीं करेंगे तो वे अधिक किताबें बेचेंगे। लेकिन *दिव्य संप्रभुता, मानवीय जिम्मेदारी, बाइबिल परिप्रेक्ष्य और तनाव* ने मेरे

लिए वही किया जो कार्सन की पुस्तकों ने अक्सर किया है। इसने वह व्यक्त किया जो मैं बाइबल का अध्ययन करने से सच जानता था, भले ही मैं इसे अच्छी तरह से व्यक्त न कर पाया।

और अन्य बातों के अलावा, वह कहते हैं, अगर हम सोचते हैं कि परमेश्वर के पुत्र का अवतार संप्रभुता, जिम्मेदारी, दुविधा, तनाव, विरोधाभास, विरोधाभास, रहस्य को हल करने वाला था, तो हम गलत हैं। यह इसे और भी बदतर बना देता है क्योंकि पुत्र परमेश्वर है। अध्याय 5, वह जिसे चाहता है उसे जीवन देता है।

जैसे पिता मरे हुएों को जीवित करता है और उन्हें जीवित करता है, वैसे ही बेटा जिसे चाहता है उसे जीवन देता है। वह परमेश्वर है। ओह, लेकिन वह एक मनुष्य भी है।

अध्याय 4 में, वह थके होने के कारण कुएँ के पास बैठ जाता है। केल्विन सही कहता है कि वह नाटक नहीं कर रहा है। वह एक इंसान था, कभी सिर्फ इंसान नहीं, बल्कि वहाँ ईश्वर-मनुष्य था। उसकी मानवता सर्वोपरि है।

और यूहन्ना सम्पूर्ण व्यक्ति के बारे में कहता है; ईश्वर-मनुष्य के अलावा कोई अन्य मानवता नहीं है। वह मसीह के व्यक्तित्व के बारे में कहता है, वह थका हुआ था और याकूब के कुएँ के पास बैठ गया। और इसलिए यीशु और चौथा सुसमाचार हमें यीशु के तरीकों और शब्दों और संकेतों के बारे में बताता है, जो ईश्वरीय संप्रभुता, मानवीय जिम्मेदारी, तनाव को हल नहीं करता है।

यह हल करने योग्य नहीं है। परमेश्वर सर्वोच्च है। और जब यीशु के लिए कुछ करने और मुसीबत में पड़ने का समय आया, तो किसी ने भी उस पर हाथ नहीं उठाया क्योंकि मरने और पिता के पास लौटने और जी उठने और पिता के पास लौटने का उसका नियत समय अभी तक नहीं आया था।

लेकिन जब उसे मानवीय जिम्मेदारी निभानी होती है, तो वह वैसा ही करता है जैसा कि हम 7:1 में देखते हैं। इसके बाद, यीशु गलील में घूमता रहा। वह यहूदिया में नहीं घूमता था क्योंकि यहूदी उसे मार डालना चाहते थे।

वह क्या कर रहा है? अगर ईश्वर सर्वोच्च है, तो क्या हम जो चाहें कर सकते हैं? क्या हम राजमार्ग के बीच में चल सकते हैं? इसे ईश्वर को लुभाना कहते हैं। आप ट्रैक्टर-ट्रैलर से कुचले जाते हैं। यह मूर्खता है।

यीशु ने परमेश्वर की परीक्षा नहीं ली। वह जानता था कि वे उसके पीछे पड़े हैं। इसलिए, वह वहाँ नहीं गया।

पिता की इच्छा के अनुरूप और आज्ञाकारी था, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, हम बाद में बहस करेंगे। उसके पास अपनी सभी दिव्य शक्तियाँ हैं। वह उन्हें नहीं छोड़ता।

वह जो त्यागता है वह है उनका स्वतंत्र उपयोग। मैं पहले सोचता था कि यह हमेशा के लिए था। लेकिन अब मुझे लगता है कि यह हमेशा के लिए था।

और अपने जीवन के हर दिन, वह पिता के प्रति समर्पित रहा और कभी भी पिता की इच्छा के विरुद्ध उन शक्तियों का उपयोग नहीं किया। क्या कभी-कभी पिता की इच्छा होती थी कि पुत्र दिव्य शक्ति का उपयोग करे? हाँ, ऐसा था। और अन्यथा कहना एक संशोधित व्यावहारिक केनोसिस है जिसे आज कुछ सम्मानित और सही मायने में ईसाई शिक्षक, विशेष रूप से दार्शनिक, अपना रहे हैं।

स्टीव विलेम की प्रतिक्रिया देखें, उनकी दयालु और दृढ़ प्रतिक्रिया कि वे गलत हैं। अन्य समय में, यह पिता की इच्छा होती है कि पुत्र अपनी दिव्य शक्तियों का उपयोग न करे, बल्कि ईश्वर-मनुष्य के रूप में प्रतिक्रिया दे। व्यक्ति जंगल में शैतान को जवाब देता है, उसे राज्य आने के लिए नहीं, बल्कि व्यवस्थाविवरण से तीन बार उद्धृत करके, ईश्वर के वचन से दुष्ट को ईश्वर-मनुष्य के रूप में फटकार लगाता है।

क्या हम इन सभी बातों को पूरी तरह से सुलझा सकते हैं? हम नहीं कर सकते। याद रखें, दो महान रहस्य हैं त्रिदेव परमेश्वर की त्रित्व और एकता तथा मसीह के व्यक्तित्व की दो प्रकृतियाँ। अब्राहम के जन्म से पहले, मैं हूँ।

पहले ऐसा माना जाता था कि यीशु निर्गमन 3:14, महान मैं हूँ कथन का उल्लेख कर रहे थे। जोहानिन विद्वत्ता, अर्थात् यूहन्ना के सुसमाचार का अध्ययन, की आम सहमति अब यह है कि वह यशायाह के उत्तरार्द्ध में मैं हूँ कथन का उल्लेख कर रहे हैं। मैं इस निष्कर्ष से सहमत हूँ। उदाहरण के लिए, यशायाह 45, श्लोक 5, मैं प्रभु हूँ, और कोई दूसरा नहीं है।

मेरे अलावा कोई ईश्वर नहीं है। श्लोक 6, मैं बस इन श्लोकों के कुछ अंश पढ़ रहा हूँ, मैं ही प्रभु हूँ और कोई दूसरा नहीं है। मैं प्रकाश बनाता हूँ और अंधकार पैदा करता हूँ।

मैं यहोवा हूँ जो ये सब करता हूँ। श्लोक 18, मैं यहोवा सच बोलता हूँ। मैं वही घोषणा करता हूँ जो सही है।

श्लोक 22, मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ। परमेश्वर कितना दयालु है। बाइबल के आरंभ से लेकर अंत तक, हमारे पास इस प्रकार की बातें हैं।

प्रकाशितवाक्य 22 में लोगों से ऐसी कई अपीलें हैं, मेरे पास आओ, यीशु की अपील, पिता की अपील, और आत्मा द्वारा उस संदर्भ में भी उल्लेख किया गया है। आत्मा कहती है, आओ, मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ, यशायाह 45:22, पृथ्वी के सभी छोरों से। क्योंकि मैं ही परमेश्वर हूँ और कोई दूसरा नहीं है।

मैंने अपने मुँह से यह शपथ ली है कि जो वचन वापस नहीं आएगा, वह धार्मिकता से निकला है। यहोवा कहता है, मेरे लिए हर घटना झुकेगा। मेरे लिए, एलिप्सिस द्वारा, यह निहित है कि हर जीभ निष्ठा की शपथ लेगी।

अगर यह परिचित लगता है, तो ऐसा होना चाहिए। पॉल ने फिलिप्पियों 2 में इसका हवाला दिया है, और हम बाद में वहाँ वापस आएँगे जब हम मसीह के ईश्वरत्व, मसीह की मानवता, विशेष रूप से दो राज्यों की शिक्षा पर चर्चा करेंगे। यह एक और रूप है।

यीशु दावा कर रहे हैं, मुझे कहना चाहिए, कि वे यशायाह की भविष्यवाणी के हैं। अब्राहम के जन्म से पहले, मैं हूँ। वे कथन उन्हीं ने कहे थे।

अर्थात्, वह पूर्व-अवतार था। न केवल पुराने नियम के कथन और पुराने नियम में पुत्र के रूप में परमेश्वर के प्रकटन, अर्थात्, क्रिस्टोफ़नीज़, न केवल मसीह के पूर्व-अस्तित्व को दर्शाते हैं, बल्कि नया नियम स्वयं उसके पूर्व-अस्तित्व को सिखाता है। यूहन्ना 1:1 से 3, "आदि में वचन था, वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।"

यह व्यक्ति, जो श्लोक 14 में देहधारी होता है, अपने आप में सच्चा मानव स्वभाव ग्रहण करता है, मनुष्य बनता है, वह देहधारी होने से पहले, आरंभ में परमेश्वर के साथ था। अर्थात्, वह अपने अवतार से पहले से ही अस्तित्व में था। हम इसे श्लोक 9 और 10 में देखते हैं।

सच्चा प्रकाश, जो सभी को प्रकाश देता है, दुनिया में आ रहा था। वह दुनिया में था और इसी तरह। प्रकाश दुनिया में आने से पहले ही अस्तित्व में था ताकि अंधकार में लोगों पर चमक सके।

यह परमेश्वर और पाप के बारे में अज्ञानता है। और फिर 15 स्पष्ट है। यूहन्ना ने उसके बारे में गवाही दी और पुकारा; यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा था, जो मेरे बाद आता है वह मुझसे बड़ा है क्योंकि वह मुझसे पहले था।

जैसा कि जर्मन न्यू टेस्टामेंट के विद्वान ने कहा, जॉन एक नदी है जिसमें एक बच्चा भी तैर सकता है। यह बहुत सरल है। शुरुआती ग्रीक छात्र बस आनंद लेते हैं।

वे इसे पढ़ सकते हैं। वे इसे पढ़ सकते हैं। इब्रानियों, इतना नहीं।

जॉन, यह बहुत सरल है। यह अद्भुत है।

और फिर भी, उसी विद्वान ने कहा, जॉन एक नदी की तरह है जिसमें एक बच्चा पैदल चल सकता है, और एक हाथी तैर सकता है। इसका अर्थ यह है कि कुछ गहरी बातें हैं। कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें समझना मुश्किल है।

और इसे समझना इतना मुश्किल नहीं है क्योंकि यह बकवास जैसा लगता है। जॉन उसके बारे में गवाही देता है; मैं अनुवाद कर रहा हूँ और चिल्लाया है, कह रहा है, यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा था, जो मेरे बाद आता है वह मुझसे पहले बन गया क्योंकि वह मुझसे पहले था। क्या? वास्तव में, ESV उस मध्य मुहावरे को अच्छी तरह से समझता है।

मेरे बाद आने वाला मुझसे पहले रैंक में आता है। वह रैंक में मुझसे आगे निकल गया है, यह बिल्कुल वैसा ही विचार है क्योंकि वह मुझसे पहले था। जॉन किस बारे में बात कर रहा है? वह जो मेरे बाद आता है।

एलिज़ाबेथ मरियम से छह महीने पहले गर्भवती थी। मानवीय गणना के अनुसार, जॉन बैपटिस्ट यीशु से छह महीने बड़ा था। ओह, बेटा जॉन से बहुत बड़ा है।

इसलिए, जॉन, जो कि अग्रदूत था, कह सकता था कि वह जो मेरे बाद आता है, छह महीने आगे है। और संभवतः यहूदी रीति-रिवाज के अनुसार, उन दोनों ने 30 वर्ष की आयु में अपनी सांसारिक सेवकाई शुरू की। जॉन को भी छह महीने की बढ़त मिली थी।

वह मुझसे पहले बन गया है। वह मुझसे आगे निकल गया है, मुझसे आगे निकल गया है क्योंकि वह समय में मुझसे पहले था। जॉन एक तरह से तिरछा है, और यहाँ थोड़ा सा हाथी का पानी है।

वह मसीहा के पूर्व-अस्तित्व को स्वीकार कर रहा है। अर्थात्, इस व्यक्ति से पहले जिसे यूहन्ना बपतिस्मा देता है, वह परमेश्वर और मसीह के पुत्र के रूप में इस्राएल के सामने प्रकट हो सकता है। मनुष्य बनने से पहले, वह अस्तित्व में था।

वह हमें और अधिक विवरण नहीं देता, लेकिन इस बारे में कोई गलती न करें। परमेश्वर ने यूहन्ना के माध्यम से बात की। मेरे लिए यह बहुत उल्लेखनीय है कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को भविष्यवक्ता के रूप में कैसे स्वीकार किया गया।

उसके कानों के लिए नियम के बीच में, कोई भविष्यवक्ता नहीं। मैं उम्मीद करता हूँ कि कोई व्यक्ति जो भविष्यवक्ता होने का दावा करता है, वह कुछ संकेत करेगा, है न? दुनिया में लोग उस पर कैसे विश्वास करेंगे? क्या यह ल्यूक 4 है? आत्मा जॉन को परमेश्वर के वचन का प्रचार करने में सक्षम बनाती है। ओह, परमेश्वर का गर्म वचन इस आदमी के मुँह से निकला।

वे जानते थे कि यह परमेश्वर का वचन था क्योंकि यह परमेश्वर का वचन था। और परमेश्वर का वचन स्वयं प्रमाणित होता है। बाद में, शायद अध्याय 10 के अंत में, हम पढ़ते हैं कि यूहन्ना ने कोई चमत्कार नहीं किया।

उसने कोई संकेत नहीं दिखाए, लेकिन इस आदमी, यीशु के बारे में उसने जो कुछ भी कहा, वह सच था। यह सही है। यूहन्ना 10 का बिल्कुल अंत।

जॉन ने कोई संकेत नहीं किया। क्या तुम मजाक कर रहे हो? नहीं, मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ। यह परमेश्वर की बुद्धिमानी थी कि जॉन ने कोई संकेत नहीं किया।

उदाहरण के लिए, हालाँकि उसने कोई चिन्ह नहीं दिखाए, लेकिन हम इस तथ्य से परिचित हैं कि दूसरी शताब्दी में जॉन द बैपटिस्ट संप्रदाय था, जो एक अलग पंथ था। यह यूहन्ना के बाद आया। हे भगवान!

मैं नहीं जानता कि वह और क्या कर सकता है। पहले अध्याय में ही, मैं मसीह नहीं हूँ। मैं पैगम्बर नहीं हूँ।

अध्याय तीन, उसे बढ़ना चाहिए। जब उसके शिष्य यीशु का अनुसरण करते हैं तो मुझे घट जाना चाहिए। यह अच्छा है।

ऐसा ही होना चाहिए। जाओ और उसका पीछा करो। हे भगवान।

तो, यह जॉन की गलती नहीं थी, और यह भगवान की गलती नहीं थी। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि अगर जॉन ने कुछ चमत्कार किए होते? जॉन द बैपटिस्ट पंथ हर जगह होता। लेकिन मैं बस हैरान हूँ कि दुनिया में लोग इस आदमी पर कैसे विश्वास करते हैं, जबकि उसके पास संकेतों की कोई मान्यता नहीं है।

मैं आपको बताता हूँ, और अगर आपने उसे सुना होता, तो आप भी उस पर यकीन करते। न केवल वह अजीबोगरीब आहार पर यशायाह की तरह तैयार था, बल्कि यार, परमेश्वर का वचन उसके मुँह से आग की तरह निकला। और उसने उन लोगों के लिए आग का वादा किया जो पश्चाताप नहीं करते।

वह यहूदी विरासत से भी प्रभावित नहीं था। भगवान इन पेड़ों से अब्राहम के बेटे बना सकते हैं। हे भगवान। जॉन अविश्वसनीय है।

नया नियम भी ईश्वर के पुत्र के पूर्व अस्तित्व की शिक्षा देता है। संक्षेप में, हम इसे महान क्राइस्टोलॉजिकल मार्ग में फिलिप्पियों 2 में देखते हैं।

हम इन अंशों को बार-बार दोहराएंगे, लेकिन केवल एक बार बहुत गहराई से। यह दो अवस्थाओं के सिद्धांत, अपमान की अवस्था, उत्कर्ष की अवस्था के लिए महान तकनीकी शास्त्रीय पाठ है। तभी हम इस पर बहुत विस्तार से काम करेंगे।

लेकिन अभी के लिए, फिलिप्पियों 26, आयत 5, आपस में एक जैसा मन रखो, जो मसीह यीशु में है। यह महान मसीह-शास्त्रीय अंश एक अनुकरणीय अंश है। इस संदर्भ में इसका मुख्य उद्देश्य एक उदाहरण के रूप में है।

हम अध्याय चार से जानते हैं कि चर्च में दो प्रमुख महिला कार्यकर्ता आपस में झगड़ रही थीं। अध्याय एक में, जॉन पहले से ही एकता को बढ़ावा दे रहा है। और यहाँ, कुछ छंद पहले, उसने स्वार्थी महत्वाकांक्षा और अहंकार की निंदा की और दूसरों को खुद से ज़्यादा महत्वपूर्ण मानने की बात कही।

वास्तव में, यीशु ने जिस तरह से किया, उसके बारे में सोचें। आगे की आयतों में उनका संदेश, खास तौर पर अपमान की स्थिति में, यह है। यीशु ने फिलिप्पी के विश्वासियों और सभी चुने हुए लोगों को खुद से ज़्यादा महत्वपूर्ण माना।

हम उससे ज़्यादा महत्वपूर्ण नहीं थे, लेकिन उसने हमें इसी तरह गिना क्योंकि वह हमारे लिए मर गया। और उसने सिर्फ अपने निजी हितों के बारे में नहीं सोचा, आप इस बात पर यकीन करें, लेकिन उसका नज़रिया हमारे हितों के लिए था। वह कौन है? आपस में इस बारे में सोचो।

इस तरह से सोचो, जो मसीह यीशु में तुम्हारा है, जिसने, यद्यपि वह परमेश्वर के स्वरूप में था, परमेश्वर के साथ समानता को हड़पने की चीज़ नहीं समझा, बल्कि एक सेवक का स्वरूप धारण करके खुद को खाली कर दिया। हम ईश्वर के रूप, मॉर्फ़ि दैट शब्दों को तब तक नहीं समझ सकते, जब तक कि हम उन्हें दास के रूप के विरुद्ध इस्तेमाल होते न देखें, मॉर्फ़ि डौला, डौलोस से, थियोस से। जॉन इन दो वाक्यांशों को उस तरह से रख रहा है जिसे भाषाविद प्रतिमान संबंध कहते हैं।

वे एक दूसरे से दुश्मनी करते हैं और एक दूसरे को सूचित करते हैं। जो परमेश्वर के स्वरूप में विद्यमान था, उसने स्वयं को उसी स्वरूप में ले लिया, और दोनों मामलों में, इसका अर्थ डोसेटिज्म, स्वरूप और वास्तविकता नहीं है; इसका अर्थ है बाहरी स्वरूप जो न केवल एक मनुष्य, न केवल एक मानव, बल्कि एक दास की आंतरिक वास्तविकता को दर्शाता है। क्या परमेश्वर दास बन जाता है? यह किस तरह का धर्म है? यह एक अनुग्रह धर्म है, और हे भगवान, यूओदिया और सुन्तुखे इसे पढ़ते समय रो रहे हैं, क्योंकि वे एक दूसरे को खुद से अधिक महत्वपूर्ण नहीं मान रहे थे।

वे दूसरों के हितों की परवाह नहीं करते थे, और उनके पास पूरी कलीसिया है, हालाँकि पौलुस ने उन्हें अध्याय चार में सुसमाचार में उनके साथ प्रमुख महिलाओं और कार्यकर्ताओं के रूप में सराहा है। वह यीशु को प्रस्तुत करके, पुत्र के अपमान या दीनता को प्रस्तुत करके उन्हें नम्र बनाता है, जो मनुष्य बनने से पहले परमेश्वर के रूप में अस्तित्व में था, जिसे सबसे पहले, लगभग तीन बार, सबसे पहले इन शब्दों में, एक सेवक का रूप लेकर व्यक्त किया गया है। अर्थात्, वह पहले से ही अस्तित्व में था।

कुलुस्सियों 1 में भी यही बात है। यह भी एक और महान मसीही मार्ग है। मैं उन्हें रेट नहीं कर सकता और यह नहीं बता सकता कि उनमें से कौन सबसे महान है। वे सभी महान हैं।

उनमें से प्रत्येक के पास है, वे प्रत्येक अपने संदर्भों में अंतर्निहित हैं, चाहे उनमें से किसी का पहले से कोई अस्तित्व रहा हो या नहीं। यह आमतौर पर एक भजन के रूप में पहले से अस्तित्व में माना जाता है, जो कि अच्छी तरह से हो सकता है, लेकिन मैं आपको बताता हूँ: यह अपने संदर्भ में खूबसूरती से फिट बैठता है, और हमारा मुद्दा अभी यह है कि यह शाश्वत पुत्र के पूर्व-अस्तित्व की पुष्टि करता है। क्या यह उसकी अनंतता को साबित करता है? नहीं, लेकिन पहले से कौन मौजूद है? भगवान।

तो, यह मसीह के ईश्वरत्व को दर्शाता है, हालाँकि अभी तक हमारा मुद्दा यह नहीं है। मसीह के ईश्वरत्व को नए नियम में इतनी स्पष्टता से सिखाया गया है कि इसे नकारना अक्षम्य है। मुझे खेद है।

तथाकथित यहोवा के साक्षी के रूप में जाने जाने वाले पंथ के सदस्य, ब्रुकलिन, न्यूयॉर्क में वॉचटावर मुख्यालय में नेता, अपने खराब अनुवाद के साथ, जिनकी पूर्वधारणा है कि यीशु ईश्वर नहीं है, वह खराब अनुवाद अभी भी उनके ईश्वरत्व को सिखाता है। विशेष रूप से इब्रानियों 1 के आधार पर, लोग संघर्ष करने, अनिच्छा से, संघर्ष करने के बारे में बात करते हैं। क्या यह एक शब्द है? यीशु पर विश्वास करें, जो उनके पास था, जिनके अनुवाद में, उनकी शिक्षाओं में उनके खिलाफ दो हमले थे, क्योंकि बाइबिल उनके ईश्वरत्व को बहुत शक्तिशाली रूप से सिखाती है। दोषपूर्ण, मसीह-दान अनुवादों का उपयोग करते हुए भी, इस तरह से उनके अनुग्रह के लिए प्रभु की स्तुति करें।

क्या आप उन अनुवादकों के न्याय की कल्पना कर सकते हैं जो लाखों लोगों को नरक में ले जा रहे हैं? उन पर धिक्कार है। कुलुस्सियों 1, 15, और 16, यहाँ पौलुस दिखाता है कि मसीह सृष्टि पर सर्वोच्च है, क्योंकि उसने इसे बनाया है। वह पिता का प्रतिनिधि है और चर्च पर भी उसका अधिकार है क्योंकि उसने इसे भी बनाया है।

मृतकों में से ज्येष्ठ पुत्र के रूप में, वह चर्च का निर्माता, पुनः निर्माता, परमेश्वर के लोग हैं। मसीह अदृश्य परमेश्वर की छवि है, कुलुस्सियों 1:15, वह अदृश्य परमेश्वर है जिसे अवतार में दृश्यमान बनाया गया है।

वह सारी सृष्टि में ज्येष्ठ है। इसका क्या मतलब है? आगे के शब्द हमें बताते हैं कि उसके कारण या उसके लिए, स्वर्ग और पृथ्वी की सभी चीजें बनाई गईं। अरे, यह मुझे बाइबल के पहले अध्याय की याद दिलाता है।

उत्पत्ति 1:1 का यूहन्ना 1, कुलुस्सियों 1 और इब्रानियों 1 पर बहुत प्रभाव है। यह इन महान मसीही नए नियम के अंशों का आधार है। उसके द्वारा, स्वर्ग और पृथ्वी में सभी चीजें बनाई गईं, सभी चीजें जो दिखाई देती हैं और अदृश्य हैं। क्या आप किसी तीसरी श्रेणी के बारे में सोच सकते हैं? बस इतना ही है।

आप जो चीजें देखते हैं, और फिर स्वर्गदूतों के राज्य का उल्लेख उसके बाद आने वाले शब्दों के कारण किया गया है। सभी चीजें उसके द्वारा और उसके लिए बनाई गई थीं। अगर बेटा, माफ़ कीजिए, सृष्टि में परमेश्वर का प्रतिनिधि है, तो अंदाज़ा लगाइए क्या? वह नासरत का यीशु बनने से पहले अस्तित्व में था।

वह पहले से ही मौजूद है। इब्रानियों 1, इसी तरह, श्लोक 2 और 10। इस खूबसूरत के दो छोर पर, बिल्कुल अंतिम छोर नहीं, बल्कि इसकी ओर। शुरुआत के करीब और अंत के करीब, एक तरह के समावेश के रूप में, समावेशन, जिसे मेरे छात्रों ने मुझे बुकएंड्स कहना सिखाया, ताकि लोग समझ सकें कि इसका क्या मतलब है। हमारे पास श्लोक 1, 2 हैं। इन अंतिम दिनों में, परमेश्वर ने अपने पुत्र के द्वारा हमसे बात की है, जिसे उसने सभी चीजों का वारिस नियुक्त किया है। यीशु अंत होने जा रहा है क्योंकि उसके द्वारा उसने दुनिया भी बनाई।

वह अंत है, और वह आरंभ है। पुत्र के द्वारा, इब्रानियों में उसके लिए यही उचित शीर्षक है और यह एक दिव्य शीर्षक है। हम इसे पहले ही श्लोक 2 में देख सकते हैं। पुत्र के द्वारा, परमेश्वर ने संसार की रचना की।

अगर हम इन अंशों को ध्यान से देखें, तो पिता का प्रथम व्यक्ति होना सिखाया जाता है क्योंकि जॉन और पॉल और इब्रानियों के लेखक पुत्र की एजेंसी को संप्रेषित करने के लिए पूर्वसर्गों, के माध्यम से, द्वारा का उपयोग करते हैं। पुत्र सृष्टि में पिता का एजेंट है। उत्पत्ति 1 में पहले से ही, ऐसा लगता है कि आत्मा भी शामिल है, और शायद इरेनियस ने सही कहा था, पुत्र और आत्मा को परमेश्वर के दो हाथ कहना।

उसका मतलब बिलकुल यही था। उसने बाइबल की शिक्षा को सही-सही दर्शाया। उसने संसार की रचना की।

वह पहले से ही अस्तित्व में था। 110, भजन का हवाला देते हुए, हे प्रभु, हे प्रभु, यह आश्चर्यजनक है। श्लोक 9 में, पुत्र का एक ईश्वर है।

परमेश्वर, तुम्हारा परमेश्वर, अर्थात् पुत्र, एक मनुष्य जिसका एक परमेश्वर है। पद 10 में, वह परमेश्वर है। क्षमा करें, पद 8। हे परमेश्वर, तुम्हारा सिंहासन।

8 में पुत्र को ईश्वर कहा गया है। 9 में उसका ईश्वर है, और 10 में उसे सर्वोच्च अर्थ में प्रभु, सृष्टिकर्ता प्रभु कहा गया है। हे प्रभु, आपने आरंभ में पृथ्वी की नींव रखी और स्वर्ग आपके हाथों का काम है। क्या मैं यहाँ फिर से स्वर्ग और पृथ्वी को देख सकता हूँ? हाँ, और भजन संहिता, आपने सही अनुमान लगाया, उत्पत्ति 1:1 पर वापस प्रतिबिंबित कर रही है, भजन 102 को उद्धृत करते हुए।

हे प्रभु, आपने ही आरंभ में पृथ्वी की नींव रखी थी। स्वर्ग आपके हाथों का काम है। इसलिए, ईसाई धर्मशास्त्री सटीक रूप से कह सकते हैं और निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वह पहले से ही अस्तित्व में था।

वह सृष्टि में पिता का प्रतिनिधि था। वह सृष्टिकर्ता परमेश्वर है। इन सभी कारणों से, चर्च ने सही ढंग से स्वीकार किया है, ओह, यह सरल नहीं था।

और मुझे शुरू से ही कहना चाहिए था कि चर्च की आराधना चर्च की समझ से पहले होती है। उन्होंने यीशु के लिए भजन गाए। कुलुस्सियों और इफिसियों में ऐसी ही बातें कही गई हैं।

पहले से ही, सबसे शुरुआती ईसाई लेखकों का कहना है कि वे एक साथ इकट्ठे हुए और यीशु के लिए एक भजन गाया। इसका क्या मतलब है? याद रखें, एरियस और अन्य लोगों ने कहा कि जब उन्होंने उनके ईश्वरत्व को अस्वीकार किया तो हमने उनकी पूजा नहीं की। शुरुआती ईसाइयों ने अपने कार्यों से, अपनी समझ से पहले काम किया।

वे उसे ईश्वर मानते थे। वे उद्धार के लिए उस पर विश्वास करते थे। उन्होंने उसके नाम पर बपतिस्मा भी लिया था।

और वे प्रभु के भोज में आत्मिक रूप से उसके साथ जुड़ गए। इन सभी तरीकों से, चर्च का अभ्यास चर्च की पूरी समझ से पहले था। पूरी समझ? क्या हम अवतार को पूरी तरह समझते हैं? नहीं।

लेकिन हम इसे उन आरंभिक ईसाइयों और उनके वंशजों तथा पादरियों के कारण बेहतर तरीके से समझते हैं, जिन्होंने उन परिषदों में सामूहिक रूप से, सामूहिक रूप से उन चीजों पर काम किया, जिन्हें उन्होंने हमें मसीह के व्यक्तित्व के बारे में सटीक सिद्धांत दिए थे, जिसमें उनका पूर्व-अस्तित्व भी शामिल था। हमारे अगले व्याख्यान में, हम ईश्वर के शाश्वत पुत्र के अवतार की अद्भुत शिक्षा की ओर बढ़ते हैं।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा क्राइस्टोलॉजी पर उनके शिक्षण में दिया गया है। यह सत्र 9, सिस्टमैटिक्स, पूर्व-अस्तित्व है।